-1-

Topic. Ultimate Reality - Ramanuj

Q18) Write the nature of Ultimate reality according to Ramanuja. (रामानुज के अनुसार परमतत्त्व (ब्रह्म) के स्वरूप की व्याख्या करें।)

Ans: वैष्णव आचार्यों में सर्वाधिक प्रतिभासम्पन्न रामानुजाचार्य का वेदान्त-दर्शन 'विशिष्टाद्वैत' के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि चित् और अचित् तत्वों से विशिष्ट अर्थात् युक्त होकर भी ब्रह्म एक ही है। वही एकमात्र सर्वव्यापक स्वतंत्र सत्ता है और उससे पृथक् या परे किसी और वस्तु का अस्तित्व नहीं है। चित् और अचित् ब्रह्म के विशेषण, अवयव, शरीर अंश तथा प्रकार कहे जा सकते हैं। ब्रह्म के समान चित् और अचित् भी वास्तविक हैं क्योंकि वह इन तत्वों का स्रष्टा नहीं है। यद्यपि रामानुज संख्यात्मक एकवाद तथा गुणात्मक द्वैतवाद के प्रतिपादक प्रतीत होते हैं तथापि मौलिक सत्ता ब्रह्म अपने व्यापक रूप में इन दोनों से निरपेक्ष तथा परे है और उसका स्वरूप मूलतः आध्यात्मिक है।

रामानुज के अनुसार ब्रह्म निरवयव नहीं है जैसा कि शंकराचार्य ने माना था। चूँकि उसके अन्दर द्वैत है, इसलिए वह भेदरहित नहीं माना जा सकता। वेदान्ती तीन प्रकार के भेदों को स्वीकार करते हैं — विजातीय, सजातीय और स्वगत। गाय और घोड़े का भेद विजातीय है क्योंकि गाय वर्ग के सदस्य में जातीय असमानता होती है। सजातीय भेद में एक वर्ग के सदस्यों में ही अन्तर देखा जाता है। एक मनुष्य तथा दूसरे मनुष्य का अन्तर सजातीय भेद कहलायेगा। एक ही पदार्थ के भिन्न-भिन्न हिस्सों का अन्तर स्वगत भेद कहलाता है। मनुष्य के सिर और पैर का अंतर स्वगत भेद के अन्तर्गत आता है। रामानुज का विश्वास है कि ब्रह्म में विजातीय तथा सजातीय भेद तो नहीं है क्योंकि उससे अलग उसका विजातीय या सजातीय कोई पदार्थ सत्य नहीं है। किन्तु, उसमें स्वगत भेद विद्यमान है क्योंकि चित् और अचित् उसके दो ऐसे वास्तव अवयव हैं जिनमें तात्विक भेद है। चित् अचित् से और अचित् चित् से पूर्णतः भिन्न हैं। लेकिन सृष्टि करने के लिए ईश्वर दोनों तत्वों की सहायता लेता है। चित् तत्व से चेतन पदार्थ और अचित् तत्व से भौतिक पदार्थ उत्पन्न किये जाते हैं।

Scanned with CamScanner

2

उनकी मान्यता है कि सृष्टि होने के कारण ब्रह्म सगुण है, न कि निर्गुण जैसा कि शंकर ने बतलाया था। सगुण ईश्वर कहना अधिक उपयुक्त है क्योंकि वह अनन्त गुणों का भण्डार है। उनके अनुसार उपनिषदों में वर्णित निर्गुण ब्रह्म का तात्पर्य यही है कि ईश्वर में जीव के हेय गुण नहीं पाया जाता बल्कि वह सभी अच्छे गुणों से युक्त है। वही जगत् की सृष्टि स्थिति और प्रलय का आधार है। रामानुज ती ऐसे ईश्वर में विश्वास करते है जो जगत् में व्याप्त है, उससे परे भी है, जिनका कोई विशिष्ट व्यक्तित्व है और जो अपनी इच्छा शक्ति के द्वारा किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए जगत का निर्माण करता है उनका ईश्वर उपासना का विषय और धार्मिक साधना का लक्ष्य है। प्रार्थना के द्वारा ईश्वर को संतुष्ट करने पर उनकी कृपा से मोक्ष मिल सकता है। अतः रामानुज का ईश्वर विषयक मत पाश्चात्य ईश्वर (Theism) से मिलता-जुलता है। पाश्चात्य ईश्वरवाद भी ईश्वर को एक अनन्त, व्यक्तित्वपूर्ण, विश्वव्यापी तथा विश्वातीत मानता है। विश्व में व्याप्त होते हुए भी वह उससे महान् तथा विलक्षण है। ईश्वर के विषय में उसका दृष्टिकोण अत्यन्त सरल, सहज तथा आकर्षक है।

पुनः रामानुज ने ब्रह्म की दो अवस्थाओं को अपनी स्वीकृति प्रदान की है जिसे 'कारण ब्रह्म' तथा 'कार्य-ब्रह्म' कहा जाता है। ब्रह्म की कारणावस्था सूक्ष्म तथा अविकृत अवस्था है जिसमें चित् तथा अचित् नाम और रूप से विहिन होकर शुद्ध और अविकृत अवस्था में वह निवास करता है। वस्तुतः यह प्रलय की अवस्था है और इसमें विषयों के अभाव में ब्रह्म शुद्ध चित् अर्थात् अशरीरी जीव और अव्यक्त अचित् अर्थात् निर्विषयक प्रकृति से मुक्त रहता है। इसे 'कारण ब्रह्म' कहा जाता है। किन्तु जब सृष्टि होती है तब ब्रह्म अपने को शरीरी जीवों तथा भौतिक विषयों में व्यक्त करता है। अतः ब्रह्म की कार्यावस्था में स्थूल तथा शरीरधारी जीव एवं नानाविध भौतिक विषय उत्पन्न होते है। यह 'कार्य ब्रह्म' कहलाता है जिसमें ईश्वर, जीव और जगत् तीनों

तत्त्व अलग-अलग दिखलाई पड़ते हैं तथा तीनों तत्त्वों का कार्य क्षेत्र भी अलग-अलग हो जाता है। किन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि ब्रह्म के तीन रूप हैं बल्कि परमार्थ तत्त्व ब्रह्म तो एक ही है।

रामानुज के दर्शन में ब्रह्म तथा ईश्वर में भेद नहीं किया गया है और यही कारण है कि उनका ब्रह्म सगुण ईश्वर होने के फलस्वरूप अधिक लोकप्रिय होने का दावा कर सकता है। सगुण ईश्वर ही पुत्र के समान जगत् को प्यार कर सकता है दीन-दुःखियों की सहायता कर सकता है और भक्तों पर अनुग्रह कर सकता है। शरणागत भक्तों की रक्षा के लिए वह कृतसंकल्प है और फलतः अवतार ग्रहण करता है। इसलिए रामानुज ने ईश्वर के पाँच रूपों की व्याख्या की है ताकि भक्तजनों की मुक्ति तथा भक्ति हो सके :→

A. पर ब्रह्म वासुदेव: ईश्वर का यह रूप काल और परिणाम के परे है। इस रूप में वह ज्ञान, शक्ति, ऐश्वर्य, बल, तेज और वीर्य नामक षडैश्वर्य (six perfections) से युक्त है। इसका वासुदेव रूप वैकुण्ठ में निवास करता है।

B. व्यूह :→ जब ईश्वर सृष्टा, संरक्षक तथा संहारक के रूप में प्रकट होता है तब ईश्वर का रूप 'व्यूह' कहा जाता है। अतः सांसारिक लीला व्यूह स्वरूप ही करता है।

C. विभव अवतार :→ ईश्वर का यह रूप धरती पर साक्षात् अवतरण है। भक्तों पर कृपा करने और दुष्टों का संहार करने के लिए वह धरातल पर अवतार ग्रहण करता है। मत्स्य, नृसिंह, राम, कृष्ण आदि रूपों में भगवान का विभव होता है।

D. अन्तर्यामी :→ इस रूप में ईश्वर मानव-हृदय में निवास करता है और वही मानव-कर्मों का निर्णय करता है। वह सभी जीवों के अन्तःकरण में प्रवेश करके उनकी सभी प्रवृत्तियों को गति प्रदान करता है।

E. अर्चावतार :→ कभी-कभी ईश्वर मूर्ति विशेष के रूप में ग्राम, नगर आदि में निवास

करता है ताकि भक्त की आराधना सार्थक हो और उसे ईश्वर की दया तथा अनुकम्पा किस मिल सके। यह अवतार का एक विशिष्ट रूप है।

रामानुज ब्रह्म के साथ जीव और जगत का गहरा सम्बन्ध मानते हैं। सृष्टि ब्रह्म के समान ही सत्य है। ब्रह्म पर आश्रित रूप में यह यथार्थ है क्योंकि कारण को सत्य मानने पर कार्य को असत्य मानना अदूरदर्शिता होगी। उपनिषदों के नानात्व का निषेध और एकत्व का प्रतिपादन करने वाले वाक्य केवल यही बतलाते हैं कि विषयों की ब्रह्म से कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। अतः जहाँ शंकर सृष्टि को असत्य, मिथ्या तथा माया कहते हैं, वहाँ रामानुज ने सृष्टि की सत्यता की रक्षा की है। पुनः ईश्वर समस्त चराचर जगत में व्याप्त रहने के कारण प्रत्येक जीव में व्याप्त है। जिसप्रकार, अंश का अस्तित्व अंशी पर, गुण का अस्तित्व द्रव्य पर और जीवित शरीर का अस्तित्व आत्मा पर निर्भर है, उसीप्रकार जीव का अस्तित्व ईश्वर पर निर्भर है। जिसप्रकार आत्मा शरीर का गति से नियंत्रण करती है उसीप्रकार ईश्वर भी जीव जगत रूपी शरीर का नियंत्रण करता है। जिसप्रकार शारीरिक विकारों या त्रुटियों से आत्मा प्रभावित नहीं होती, उसीप्रकार जीव जगत के विकारों या त्रुटियों से ईश्वर भी प्रभावित नहीं होता। राजा की आज्ञा के पालन या उल्लंघन से प्रजा को जो सुख-दुःख होता है, उसका भागी राजा नहीं होता। इसप्रकार, ब्रह्म, जीव और जगत से संबंधित जरूर है, पर उसके सारे दोषों से मुक्त है।

उनके ब्रह्म-विषयक विचार की तुलना शंकर के ब्रह्म-विचार से की जा सकती है। यद्यपि रामानुज तथा शंकर ब्रह्म एकमात्र ब्रह्म की सत्ता स्वीकार करते हैं, तथापि ब्रह्म के अद्वैत स्वरूप में भिन्नता है। रामानुज का ब्रह्म सगुण, सविशेषण उपास्यदेव तथा धार्मिक भावना का आधार है। किन्तु शंकर का ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष तथा व्यक्तित्वशून्य तत्त्व है जो धार्मिक-भावना की संतुष्टि नहीं करता। इसके अलावा, रामानुज चित् तथा अचित् तत्त्वों की भिन्नता के कारण ब्रह्म में स्वगत भेद मानते हैं

जबकि शंकर का सर्वभेदरहित है। पुनः रामानुज का सृष्टिकर्ता ब्रह्म real है और उसकी सृष्टि भी real है, लेकिन शंकर ब्रह्म के सृष्टिकर्ता रूप को Unreal मानते हैं। उनके अनुसार पारमार्थिक दृष्टि से न सृष्टि है और न सृष्टिकर्त्ता ही। अन्त में, रामानुज का ब्रह्म भक्ति तथा प्रपत्ति से प्रसन्न होकर भक्त को 'परमपद' प्रदान करता है। फलतः वह 'ब्रह्म सदृश' हो जाता है। परन्तु शंकर के अनुसार, ब्रह्मभाव तो सर्वत्रिज्ञान है, उसकी सत्ता ज्ञानगम्य है। इसलिए भक्ति और प्रपत्ति का व्यावहारिक महत्व है। उनके अनुसार, ब्रह्म को जाननेवाला ब्रह्म हो जाता है। (ब्रह्मविद्‌ब्रह्मैव भवति)

<u>आलोचनाएँ :→</u>

क. आलोचकों की मान्यता है कि रामानुज का ब्रह्म-विषयक मत धार्मिक व्यक्तियों के लिए भले ही आकर्षक तथा रोचक लगे, किन्तु विश्व की व्याख्या जो भी की जाती है, वह ग्राह्य नहीं है। सृष्टि क्यों होती है – इसका कोई तर्कपूर्ण उत्तर रामानुज नहीं दे पाते। 'सृष्टि को लीला' बतलाना रूपक (Metaphor) है, इससे बौद्धिक व्याख्या नहीं होती। अतः सृष्टि-समस्या का सम्यक् निदान रामानुज का ब्रह्म नहीं कर पाता है।

ख. पुनः आपत्ति की जाती है कि जब जीव और जगत् ब्रह्म के वास्तविक अंश हैं तब जीव के सुख-दुःख क्या ब्रह्म के सुख-दुःख नहीं कहे जा सकते? यदि ब्रह्म को विशेष्य तथा जगत् को उसका विशेषण माना जाता है तो फिर जगत् में जो दोष है, उनसे ब्रह्म अछूता कैसे रह सकता है? विकासशील भूत और जीवों को ब्रह्म का वास्तविक अंश समझना और साथ ही ब्रह्म को अविकारी कहना इन दोनों परस्पर-विरोधी बातों को मानने से रामानुज के सिद्धान्त में कुछ द्विविधा तथा कठिनता आ गई है।

ग. आक्षेप किया जाता है जब ईश्वर सर्व-शक्तिमान और सभी कल्याणकारी गुणों से युक्त है तो संसार में दुःख और अशुभ का अस्तित्व क्यों है? इस प्रश्न का उचित समाधान रामानुज नहीं कर पाते। मनुष्य दुःख और अशुभ का

Scanned with CamScanner

कारण नहीं है। ईश्वर भी उसका कारण नहीं हो सकता क्योंकि वह कल्याणकारी है। इसप्रकार, दुःख और अशुभ की कोई व्याख्या नहीं मिलने के कारण उनके ब्रह्म-विचार में कई शंकाएँ उठती हैं जिसका उचित समाधान रामानुज नहीं कर पाते।

यह कहा जा सकता है कि ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण और असीम दोनों मानना असंगत है क्योंकि हमारी बुद्धि व्यक्तित्व के साथ असीमता तथा अनन्तता की कल्पना करने से इनकार करती है। इसलिए व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर असीम नहीं हो सकता और असीम न होने पर धार्मिक श्रद्धा का पात्र नहीं बन सकता। साथ ही, ईश्वर को विश्व में व्याप्त मानकर ईश्वर-प्राप्ति की प्रेरणा नष्ट कर डालता है। निकटता इतनी [illegible] जाती है कि ईश्वर को प्राप्त करने की प्रेरणा नहीं रह जाती। जब ईश्वर हममें है ही, तो उसके साक्षात्कार के लिए चेष्टा क्यों की जाए? अतः यहाँ भी रामानुज का विचार तुच्छ-सा है।

निष्कर्ष :→ वास्तव में, वेदान्तिक परम्परा से वैष्णवीय ईश्वरवाद का सामंजस्य करने का कार्य इतना कठिन है कि उसमें अनेक कठिनाईयाँ आ जाना स्वाभाविक है। वैष्णव मत के सभी सिद्धान्तों का उपनिषदों के अद्वैतवाद से सामंजस्य नहीं हो सकता। रामानुज ने दोनों के मूल रूप को अक्षुण्ण रखकर उनका सामंजस्य करने का प्रयास किया और इस प्रयास में कोई भी अन्य व्यक्ति उनसे अधिक सफल नहीं होता। उनकी यह कोशिश सराहनीय है। भक्त के ईश्वर-प्रेम की पूर्ण संतुष्टि के लिए आत्म-शुद्धि तथा आत्म-समर्पण तो आवश्यक है, परन्तु आत्मलय नहीं। भक्त के लिए सबसे बड़ा आनन्द है ईश्वर की अनन्त महिमा का अनवरत ध्यान और इसी आनन्द के उपभोग के लिए उसका अपना अस्तित्व आवश्यक है। समस्त प्रकार के अज्ञान और बन्धनों से मुक्त हो जाने पर मुक्तात्मा पूर्ण ज्ञान और भक्ति के साथ ब्रह्म-चिन्तन का असीम आनन्द अनुभव करता है।

Scanned with CamScanner